शोध–प्रारूप

खोरठा साहित्यकार बिनोद कुमार का जीवन एवं साहित्य : एक अध्ययन

पीएच०डी० उपाधि हेतु प्रस्तावित शोध–प्रारूप की रूपरेखा

जनजातीय एवं क्षेत्रीय भाषा संकाय

रांची विश्वविद्यालय, रांची ।

वर्ष : 2025

शोध निर्देशक

डॉ० अरविन्द कुमार
सहायक प्राध्यापक
खोरठा विभाग डोरंडा कॉलेज
राँची विश्वविद्यालय, राँची।

शोधार्थी

पूजा कुमारी
एम.ए. खोरठा
यू.जी.सी. नेट/जे.आर.एफ
जनजातीय एवं क्षेत्रीय भाषा संकाय
राँची विश्वविद्यालय, राँची।

खोरठा साहित्यकार बिनोद कुमार का जीवन एवं साहित्य : एक अध्ययन

प्रस्तावना

भारत का 28वां राज्य झारखण्ड, जिस पर प्रकृति ने अपने सौन्दर्य का खजाना जमकर बरसाया है। घने जंगल, खूबसूरत वादियाँ, जलप्रपात, कलकल बहती नदियां, वन्य प्राणी, खनिज संपदा से भरपूर और संस्कृति के धनी इस राज्य में कई जनजातीय और गैर जनजातीय समुदाय के लोग युगों से एक दूसरे के विकास में सहयोग करते हुए साथ – साथ निवास करते आ रहे हैं। झारखण्ड राज्य एक जनजातीय बाहुल्य राज्य है, किंतु राज्य में निवास करने वाले गैर जनजातीय (सदान) समुदाय के लोगों के रंग–रूप, वेश–भूषा, रहन–सहन में कोई खास अंतर नहीं मिलता है। सामाजिक, सांस्कृतिक एवं भाषाई क्रियाकलापों में जनजातीय एवं गैर जनजातीय समुदाय के लोग एक सूत्र में पिरोए हुए नजर आते हैं।

प्राकृतिक सौन्दर्य से परिपूर्ण इस राज्य में निवास करने वाले जनजातीय एवं गैर जनजातीय समुदाय के बीच सरकार के द्वारा मान्यता प्राप्त 9 भाषाएं प्रचलित है, जिनका संबंध ऑस्ट्रिक, द्रविड़ एवं आर्य भाषा परिवार से है। सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त इन भाषाओं में संताली, मुंडारी, खड़िया, हो एवं कुरुख जनजातीय भाषा के अंतर्गत आते हैं, तथा खोरठा, नागपुरी, पंचपरगनिया और कुरमाली क्षेत्रीय भाषा के अंतर्गत आते हैं। इन 9 भाषाओं में पठन–पाठन का कार्य राज्य के विभिन्न विश्वविद्यालयों में अविभाजित बिहार से ही हो रही है।

खोरठा भाषा सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त क्षेत्रीय भाषा के अंतर्गत आता है वर्तमान में इस भाषा को राज्य का द्वितीय राजकीय भाषा का दर्जा भी प्राप्त है। खोरठा भाषा झारखंड के सबसे बड़े क्षेत्र में बोली जाने वाली भाषा है, यह भाषा मुख्य रूप से राज्य में निवास करने वाले गैर जनजातीय समुदायों (सदानों) की

मातृभाषा है, किन्तु झारखंड के उतरी छोटानागपुर तथा संथाल परगना के कई जनजातीय समुदायों की भी मातृभाषा खोरठा ही है। यह भाषा जनजातीय समुदाय एवं गैर जनजातीय समुदाय के बीच संपर्क भाषा के रूप में भी काम करती है।

खोरठा झारखण्ड की एक स्वतंत्र एवं समृद्ध भाषा है, साहित्य के विविध विधाओं पद्य एवं गद्य के अंतर्गत समाहित कविता, गीत, खण्ड काव्य, काव्य, प्रबंध काव्य, निबंध, नाटक, उपन्यास, कहानी, संस्मरण, लघुकथा, शब्दचित्र, जीवनी आदि खोरठा भाषा में लिखे गए हैं। खोरठा भाषा एवं साहित्य को विकसित एवं सुशोभित करने में खोरठा साहित्यकारों का बहुमूल्य योगदान रहा है इस भाषा में अनेक रचनाकार हुए हैं, उन्ही में से एक बिनोद कुमार हैं जो मूलतः कहानीकार एवं कवि दोनों हैं। इनके द्वारा खोरठा भाषा साहित्य से संबंधित कई महत्वपूर्ण कार्यों को संपादित किया गया है तथा भाषा साहित्य के विकास में इन्होंने अपना बहुमूल्य योगदान दिया है एवं वर्तमान में भी ये खोरठा साहित्य के विकास में लिन हैं।

खोरठा भाषा का अलख जगाने वाले भाषाविद बिनोद कुमार का जन्म 18 नवंबर 1961 ई. को हजारीबाग जिला के दारुडीह गाँव में एक किसान परिवार में हुआ था, इनके पिता का नाम श्री मथुरा प्रसाद एवं माता का नाम सुगवंती देवी है। पाँच भाई बहन में सबसे बड़े बिनोद कुमार बचपन से ही अपनी मातृभाषा खोरठा में कहानी कविता लिखा करते थे। इनकी प्रारम्भिक शिक्षा गाँव के ही स्कूल से हुई थी जिसके बाद सरस्वती हाई स्कूल दारू से 1977 ई. में मैट्रिक तथा संत कोलम्बा महाविद्यालय से 1981 ई. में बी. ए. पास किये और कानून कि पढ़ाई के लिए राजेन्द्र लॉ कॉलेज हजारीबाग में नामांकन लिए लेकिन दो साल कानून की पढ़ाई करने के बाद उनके काका देवनारायण कुमार (अधिवक्ता) और उनके साथी गोविंद महतो जंगली जी के कहने पर इन्होंने कानून कि पढ़ाई छोड़कर रांची विश्वविद्यालय रांची से अपनी मातृभाषा खोरठा से सत्र 1982–84 में स्नातकोत्तर प्रथम श्रेणी से पास किया इसी विश्वविद्यालय से इन्होंने 1989 में हिन्दी

से भी एम.ए. किया। खोरठा से एम.ए. करने के बाद 10 सितंबर 1986 से 1987 तक अवैतनिक सेवा स्नातकोत्तर जनजातीय एवं क्षेत्रीय भाषा विभाग, रांची विश्वविद्यालय रांची में खोरठा भाषा – व्याख्याता के रूप में दिए वर्तमान में बिनोद कुमार खोरठा भाषा के वायाख्याता के पद पर डॉक्टर श्यामा प्रसाद मुखर्जी विश्वविद्यालय में अपनी सेवा दे रहें हैं।

बिनोद कुमार पूरे झारखंड खासकर खोरठा क्षेत्र में सांस्कृतिक जनजागरण लाने को लेकर कई तरह के आयोजन किए जिसमें कवि सम्मेलन, खोरठा भाषा साहित्य सम्मेलन, गोष्ठी अलग अलग क्षेत्रों में किए। इनकी 20–25 रचना अलग–अलग पत्र–पत्रिकाओं में जैसे तितकी, आदिवासी, डहर, नागपुरी कला संगम, रांची कि स्मारिका, लुआठी, अखड़ा, प्रभात खबर, रांची एक्सप्रेस, आज, हिंदुस्तान आदि में खोरठा कविता, खोरठा वार्ता आदि छपते रहा है। आकाशवाणी और दूरदर्शन से भी इनकी कविता, कहानी, वार्ता आदि रचनाएं प्रसारित होते रहा है, इनकी पहली कविता का प्रसारण 1987 ई. को दूरदर्शन केंद्र रांची से हुआ था जिसका शीर्षक था 'जुवान'।

बिनोद कुमार की साहित्यिक कृतियाँ :

I. सोंध माटी –कहानी कविता संग्रह
II. खोरठा लोकगीतों का सांस्कृतिक अध्ययन
III. धोवइयाक धमक
IV. बँबरा (खोरठा निबंध संग्रह, अप्रकाशित)
V. बोन पतरा (खोरठा कहानी संग्रह, अप्रकाशित)

विभिन्न पत्र–पत्रिकाओं एवं संकलनों में प्रकाशित कृतियाँ :

I. रुसल पूटूस (कविता प्रकाशित)
II. एक पथिया डोंगल महुआ (कविता प्रकाशित)

III. खोरठा गइद–पइद संगरह (कविता प्रकाशित)
IV. दू डाइर जिरहूल फूल (कविता प्रकाशित)
V. जंगल गाथा (खोरठा लेख प्रकाशित)
VI. प्रसंग (कविता प्रकाशित)

खोरठा भाषा साहित्य के विकास में सहभागिता संपादक सहयोगी के रूप में :

I. खोरठा गइद–पइद संगरह (सहयोगी संपादक)
II. खोरठा लोक कथा (संपादक सलाहकार)
III. दू डाइर जिरहूल फूल (सहयोगी संपादक)
IV. दू डाइर परास फूल (सहयोगी संपादक)
V. खोरठा सहित सदानिक बेयाकरन

शोध कार्य की प्रेरणा :

कोई भी शोध कार्य को सफल बनाने में प्रेरणा का प्रमुख योगदान होता है। प्रेरणा हमें बताता है कि हम कोई भी कार्य क्यों करते हैं। यह मानवीय कार्यों के पीछे प्रेरक शक्ति है। प्रेरणा वह प्रक्रिया है जो लक्ष्य–उन्मुख व्यवहारों को आरंभ करती है, मार्गदर्शन करती है और उन्हें बनाए रखती है। हमारी प्रेरणा ही हमें कोई कार्य करने के लिए प्रेरित करती है, जो हमें अपने लक्ष्यों के करीब ले जाती है।

औचित्य :

झारखण्ड मेरी जन्मभूमि एवं कर्मभूमि है और मातृभाषा खोरठा होने के कारण बचपन से ही इस भाषा के प्रति लगाव रहा है। मैंने अपनी पढ़ाई के दौरान जब खोरठा भाषा के साहित्यकारों में से बिनोद कुमार की रचनाओं को पढ़ा, इनकी

रचनाओं ने मुझे काफी प्रभावित किया। इन्होंने अपनी रचनाओं से खोरठा साहित्य के भंडार को भरा अनेक सम्मेलनों के माध्यम से खोरठा का प्रचार प्रसार किया। बिनोद कुमार का रचना संसार अत्यंत व्यापक है, इन्होंने अपनी रचनाओं मे सरल और सहज शब्दों का सही प्रयोग किया है। ऐसे महान खोरठा साहित्यकार की जीवनी एवं रचनाएं उपेक्षित पड़ी हुई हैं।

अतः मुझे लगा कि अगर मेरे जीवन में शोध कार्य का अवसर मिला, तो मैं खोरठा साहित्यकार बिनोद कुमार की जीवन और इनकी बिखरी रचनाओं को समेटने की कोशिश करूंगी, जिससे आने वाली पीढ़ी को इस शोध कार्य के द्वारा कुछ जानकारियाँ दे सकूँ। फलतः इनकी रचनाओं को समाज के सामने प्रस्तुत करना ही मेरे लिए बहुत बड़ी बात है, इसलिए मैंने इसी विषय को अपना शोध विषय चुना। इस शोध कार्य के लिए मेरे परम आदरणीय गुरुजनों ने एवं मित्रों ने भी इस शोध कार्य के लिए मुझे प्रेरित किया।

शोध प्रबंध का उद्देश्य :

किसी शोध कार्य प्रारंभ करने के पूर्व शोध से संबंधित उद्देश्य निर्धारित की जाती है। इस शोध प्रारूप का निम्नांकित उद्देश्य है :–

I. खोरठा भाषा का उद्भव एवं विकास का अध्ययन करना।
II. खोरठा भाषा व साहित्य का गहन अध्ययन करना।
III. खोरठा भाषा–साहित्य के आने वाले शोधार्थियों के लिए सूचना संकलन, मूल्यांकन, संग्रहण एवं विश्लेषण का मार्ग प्रशस्त करना।
IV. खोरठा साहित्यकार बिनोद कुमार की कृतियों का सामाजिक, सांस्कृतिक तथा भाषायी जनजीवन पर प्रकाश डालना।

V. खोरठा भाषा, इसके शैक्षणिक एवं साहित्यिक विकास में बिनोद कुमार के योगदान को दर्शाना।

शोध का महत्व :

शोध प्रत्येक मानव ज्ञान में अभिवृद्धि और प्रत्येक समाज व राष्ट्र के विकास के लिए अत्यंत आवश्यक है। किसी भी विषय क्षेत्र में शोध के बिना प्रगति और विकास संभव नहीं है। शोध ज्ञान भण्डार को विकसित एवं परिमार्जित करता है।

प्रस्तावित शोध का समाज पर प्रभाव :

I. इस शोध प्रबंध के प्रकाश में आने से समस्त खोरठा भाषा–भाषियों एवं समाज में खोरठा साहित्यकारों के प्रति सम्मान बढ़ेगा और जागृति की लहर आएगी।

II. निज भाषा प्रेम एवं अपनी संस्कृति के प्रति लोगों का रुझान बढ़ेगा।

III. सामाजिक, शैक्षणिक, सांस्कृतिक एवं साहित्यिक कार्य के प्रति समझदारी एवं निष्ठा का विकास होगा।

IV. खोरठा साहित्यकार बिनोद कुमार का जीवन एवं साहित्य : एक अध्ययन के सम्यक अवलोकन से इनकी गुण गरिमा के कारण लोगों में सामाजिक, शैक्षणिक कार्यों का उत्थान होगा। शोध पत्र के प्रकाश में आने पर झारखण्ड ही नहीं बल्कि पूरे राष्ट्र के क्षेत्रीय भाषाओं, कला–संस्कृति के यशस्वी रचनाओं के योगदानों को प्रकाश में लाने की प्रेरणा मिलेगी।

शोध सामग्री :

प्रस्तुत शोध कार्य के लिए निम्नलिखित सामग्रियों की आवश्यकता होगी

I. पुस्तकें– डॉ० बिनोद कुमार लिखित पुस्तकें, प्रकाशित रचनाएं, संदर्भ ग्रंथों, पत्र–पत्रिकाएं एवं पांडुलिपियों का अध्ययन ।
II. कम्पुटर, लैपटॉप, प्रिंटर, मोबाइल
III. इन्टरनेट
IV. कैमरा
V. समाचार पत्र
VI. पत्र–पत्रिकाओं की सूचि
VII. पेन ड्राइव आदि।

शोध विधि :

प्रस्तावित शोध प्रबंध को पूर्ण करने के लिए निम्नांकित शोध विधियों का अनुसरण किया जायेगा –

I. साक्षात्कार विधि
II. प्रश्नावली विधि
III. आलोचनात्मक विधि
IV. अवलोकन विधि
V. तुलनात्मक विधि
VI. वर्णात्मक विधि
VII. केस स्टडी

शोध–प्रारूप

शीर्षक : खोरठा साहित्यकार बिनोद कुमार का जीवन एवं साहित्य : एक अध्ययन

प्रथम अध्याय

खोरठा भाषा एवं साहित्य का लेखन की परंपरा

I. खोरठा भाषा का सामान्य परिचय

II. खोरठा में साहित्य लेखन की परंपरा एवं प्रमुख साहित्यकार

III. खोरठा लोक साहित्य का सामान्य परिचय

IV. खोरठा शिष्ट साहित्य का सामान्य परिचय

द्वितीय अध्याय

बिनोद कुमार के जीवन के विविध पक्ष एवं चरण

I. जन्म

II. पारिवारिक पृष्ठभूमि

III. बाल्यावस्था, किशोरावस्था, युवावस्था एवं प्रौढ़ावस्था

IV. शिक्षा

V. विवाह

VI. पेशा

VII. जीवन की महत्वपूर्ण घटनाएं

VIII. व्यक्तित्व :–

- वाह्य व्यक्तित्व एवं आंतरिक व्यक्तित्व

IX. विविध कार्य :–

- सामाजिक क्षेत्र में
- सांस्कृतिक क्षेत्र में
- शिक्षा के क्षेत्र में
- भाषा संस्कृति के क्षेत्र में
- अन्य

तृतीय अध्याय

खोरठा भाषा एवं साहित्य के विकास में बिनोद कुमार का योगदान

I. साहित्यकार के रूप में

II. खोरठा भाषायी आंदोलन में

III. खोरठा भाषा संस्थाओं में भूमिका

IV. खोरठा भाषा साहित्य व संस्कृति के विकास में

V. अन्य योगदान

चतुर्थ अध्याय

बिनोद कुमार के पद्य साहित्य का परिचय और विश्लेषण

I. पद्य रचनाओं का साहित्यिक मूल्यांकन :–

- भाव पक्ष
- कला पक्ष
- अन्य वैशिष्ट्य

पंचम अध्याय

बिनोद कुमार के गद्य साहित्य का परिचय और विश्लेषण

I. कहानी
II. निबंध
III. लेख
IV. अन्य

षष्ट अध्याय

बिनोद कुमार की समकालीन परिस्थितियाँ ओर उनकी रचनाओं में अभिव्यक्त समस्याएँ

I. पारिवारिक
II. सामाजिक
III. राजनैतिक
IV. आर्थिक
V. अन्य

सप्तम अध्याय

खोरठा साहित्य में बिनोद कुमार का समग्र योगदान और स्थान

I. भूमिकाएँ
II. उपलब्धियाँ
III. सम्मान–उपाधि
IV. पद

उपसंहार

परिशिष्ट

1. आधार ग्रंथों की सूची
2. संदर्भ ग्रंथों की सूची
3. पत्र–पत्रिकाओं की सूची
4. पूर्व के शोध कार्यों की सूची

नोट : प्रस्तावित शोध प्रबंध की रूपरेखा में आवश्यकतानुसार संसोधान किया जा सकता है।

शोध निर्देशक

डॉ० अरविन्द कुमार
सहायक प्राध्यापक
खोरठा विभाग डोरंडा कॉलेज
राँची विश्वविद्यालय, राँची।

शोधार्थी

पूजा कुमारी
एम.ए. खोरठा
यू.जी.सी. नेट/जे.आर.एफ
जनजातीय एवं क्षेत्रीय भाषा संकाय
राँची विश्वविद्यालय, राँची।

आधार ग्रंथों की सूची

1. कुमार, प्रो० बिनोद, सोंध– माटी, जनजातीय भाषा अकादमी, बिहार सरकार, रांची, 1990
2. कुमार, डॉ० बिनोद, खोरठा लोकगीतों का सांस्कृतिक अध्ययन, झारखण्ड झरोखा, रांची, 2019
3. कुमार, डॉ० बिनोद, धोवइयाक धमक, झारखण्ड झरोखा, रांची, 2022
4. ओहदार, डॉ.बी.एन., खोरठा भाषा एवं साहित्य उद्भव एवं विकास, खोरठा भाषा साहित्य–संस्कृति अकादमी, रामगढ़, 2007
5. कुमार, डॉ० निरंजन, ए०के० झाः व्यक्तित्व एवं कृतित्व, झारखण्ड झरोखा रांची, 2020
6. कुमारी, डॉ. समरिता, शारदा प्रसाद शर्मा, व्यक्तित्व एवं कृतित्व, के.के. पब्लिकेशनस इलाहाबाद, 2013
7. केशरी डॉ. सविता– नागपुरी कवि कंचन जीवन एवं साहित्य, नागपुरी संस्थान, पीठोरिया, राँची
8. गौंझू, डॉ. गिरिधारी राम, पीटरशांति नवरंगी, व्यक्तित्व एवं कृतित्व, पझरा प्रकाशन, नागपुरी प्रचारिणी सभा, राँची, 1990
9. दुबे डॉ. विश्वनाथ धनीराम बक्शीः व्यक्तित्त्व एवं कृतित्व, शोध प्रबंध, अप्रकाशित 1981
10. साहित्यकार विश्वनाथ दसौंधी राजः व्यक्तित्व एवं कृतित्व, शोध प्रबंध, अप्रकाशित, 2018
11. साहू, डॉ. गोविन्द– नागपुरी कवि घासी रामः व्यक्तित्व एवं कृतित्व, शोध प्रबंध, अप्रकाशित 1976
12. साहु, डॉ. सुखदेव– डॉ. भुवनेश्वर अनुजः व्यक्तित्व एवं कृतित्व, शोध प्रबंध, अप्रकाशित, 2003

13. श्रीनिवास पानुरी : व्यक्तित्व एवं कृतित्व, 2012

संदर्भ ग्रंथों की सूची

1. 'आला', कृष्ण चन्द्र दास, खोरठा भाषा गर्हन, आला प्रकाशन, पुष्पा प्रेस, चास, बोकारो, 1997
2. 'आला', कृष्ण चन्द्र दास, सईतल साड़ा, आला प्रकाशन, पुष्पा प्रेस, चास, बोकारो, 1997
3. ओहदार, रामटहल, मइलाइल हवा, सोसाइटी फॉर हिल एरिया डेवलपमेंट, मुद्रक भुरकुण्डा प्रिंटिंग प्रेस, भुरकुंडा
4. ओहदार, बी.एन., खोरठा निबंध, जनजातीय भाषा अकादमी, बिहार सरकार, रांची, 1990
5. ओहदार, बी.एन., खोरठा भाषा एवं साहित्य उद्भव एवं विकास, खोरठा भाषा साहित्य अकादमी, रामगढ़, 2007
6. करमाली, फुतेश्वर, खोरठा कविता संग्रह, सहाय प्रिंटर्स बिजुलिया, रामगढ़ कैंट, 2004
7. कुमार, डॉ. विनोद, सोंधमाटी, जनजातीय भाषा अकादमी, बिहार सरकार, राँची, 1990
8. 'गणपति', धनपत महतो, कादो फूल, खोरठा ढाकी छेतर कमिटि, कोठार, रामगढ़, 1986
9. गरीब, शिवनंदन पांडेय, खोरठा लोकगीत, बोकारो खोरठा कमिटि, बोकारो, 1994
10. गदर, इम्तियाज, पारसनाथ, सनी प्रकाशन, धनबाद
11. गोस्वामी, मनपूरन, परासचित, बालीडीह खोरठा कमिटी, बालीडीह, बोकारो, 2006

12. 'चित्रा' चितरंजन महतो, जिनगीह टोह, खोरठा, ढांकी छेतर कमिटी, कोठार, रामगढ़, 1986
13. 'चित्रा' चितरंजन महतो, छांहइर, खोरठा भाषा साहित्य–संस्कृति अकादमी, रामगढ़, 2000
14. झा, ए.के., खोरठा गइद–पइद संगरह, बोकारो खोरठा कमिटी, बोकारो इस्पात नगर, 1989
15. झा., ए.के., खोरठा साहित सदानिक व्याकरण, झारखण्ड झरोखा, रातु रोड, राँची
16. प्रमाणिक, शिवनाथ, दामोदरेक कोरांञ, खोरठा साहित्य संस्कृति परिषद्, भभुआ, बोकारो, 1986
17. प्रमाणिक, शिवनाथ, रूसल पुटुस, बोकारो खोरठा कमिटी, बोकारो इस्पात नगर
18. महतो, संतोष कुमार, एक पथिया डोंगल महुआ, रामधन प्रकाशन, गांगजोरी बोकारो, 1990
19. पानुरी, श्रीनिवास, चाभी काठी, बालीडीह खोरठा कमिटी, बालीडीह बोकारो, झारखण्ड, (2006 में पुनःर्मुद्रित)
20. महतो, वासुदेव, खोरठा व्याकरण कर एक खेमचा, रॉयल प्रकाशन, सेवासदन पथ, रॉची
21. महतो, श्याम सुंदर, तोंय आर हाम, बोकारो खोरठा कमिटि, 1997
22. महतो, संतोष कुमार, एक मउनी फूल, रामधन प्रकाशन, गांगजोरी, बोकारो, 1988
23. महतो, श्याम सुंदर, मुक्तिक डहर, शक्तिग्राम विकास संघ, आजाद सिजुआ, भेलाटांड, 1995
24. महतो, पंचम, फरीछ डहर, बालीडीह खोरठा कमिटी, बालीडीह, बोकारो, 2001

25. महतो, घनश्याम, झींगा फूल, सहिया मिलन चिरूडीह, नवाडीह, बोकारो, 2000

26. सुकुमार, बावों हाथेक रतन, अखिल झारखण्ड खोरठा परिषद, भेंडरा, बोकारो, 2009

27. दाँगी, डॉ० आनंद किशोर, खोरठा कवियों का काव्यगत परिचय, पृथ्वी प्रकाशन, न्यू दिल्ली, 2019

खोरठा पत्र–पत्रिकाएँ

1. मातृभाषा, श्रीनिवास पानुरी, बरवाअड्डा, धनबाद, 1957
2. खोरठा, श्रीनिवास पानुरी, बरवाअड्डा, धनबाद, 1970
3. तितकी. विश्वनाथ दसौंधी 'राज', कतरासगढ़, धनबाद, 1977–78
4. करील, डॉ० बी०एन० ओहदार, ऑरमाँझी, रांची 2009
5. इंजोर, धनजंय प्रसाद, मधुपूर दवेघर, 1997
6. लुआठी, गिरिधारी गोस्वामी 'आकाशखूँटी', बालीडीह, बोकारो, 1999
7. सहिया, अनिल कुमार 'विस्थापित', बोकारो, 2002
8. सहिदान, फाल्गुनी मरीक कुशवाहा, गिरीडीह, 2002
9. तितकी, झा, डॉ० ए० के०, ढांकी क्षेत्र खोरठा कमिटी, रामगढ़
10. परास फुल, प्रबुद्ध, महेन्द्र, धनबाद, 2009
11. धरतीथान , शिवनंदन पांडेय 'गरीब', गिरीडीह